वर्कशीट का बहुआयामी प्रयोग

ममता शर्मा

शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े सभी लोगों का यह प्रयास होता है कि बच्चों के लिए सीखने के ऐसे अवसर पैदा हों जिनमें वे व्यक्तिगत तौर पर तैयार होते हुए अपने सहपाठियों के साथ मिल-जुलकर सीख सकें और उनके साथ बातचीत कर सकें। मामला गम्भीर तब होता है जब बच्चे स्कूल में न होते हुए आस-पड़ोस के समूहों का हिस्सा होते हैं जिनमें हर कक्षा और स्तर के बच्चे शामिल होते हैं। शिक्षक के सामने यह सुनिश्चित करने की चुनौती होती है कि सभी बच्चे अपने सीखने के स्तरों के हिसाब से सीखें। हम सभी जानते हैं कि कोविड-19 महामारी के दौरान जब स्कूल बन्द थे तो बच्चों के सीखने का भारी नुक़सान हुआ। नतीजतन, हम अब बहुस्तरीय समूहों को पढ़ाने की प्रक्रिया अपना रहे हैं। वर्तमान में, हमें बच्चों के साथ काम करने के लिए और भी सन्दर्भ सामग्री की आवश्यकता है और हमें यह सुनिश्चित भी करना होगा कि यह सामग्री आसानी से उनकी पहुँच में हो। इसी के साथ-साथ शिक्षक बच्चों के कार्य को उपयोगी और सार्थक बनाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं।

हमने वर्कशीटों का उपयोग एक माध्यम के रूप में इस तरह से किया कि एक समूह के सभी बच्चों को एक दिलचस्प तरीक़े से इसमें जोड़ा जा सके। हमने पाया कि कक्षा-1 से 5 के लिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन की जो वर्कशीट हैं, वे भाषा कौशल को विकसित करने के लिए उपयुक्त हैं। इनमें दी गई गतिविधियाँ, विषयवस्तु-उन्मुख कम और कौशल-उन्मुख ज़्यादा हैं। इसलिए हमने इनका उपयोग बच्चों के भाषा कौशल को विकसित करने के लिए किया और यह हमारे लिए एक अनूठा अनुभव साबित हुआ।

साथ मिलकर पढ़ना और समझना

हमने वर्कशीट के साथ-साथ पुस्तकालय की कहानी की क़िताबों का भी उपयोग किया। बच्चों को उनके सीखने के स्तरों के आधार पर वर्कशीट दी गईं। इससे उन्हें अपने सहपाठियों के साथ मिलकर पढ़ने और समझने का एक मौक़ा मिला। बच्चों ने वर्कशीट में दी गईं कहानियाँ पढ़ीं, सवालों के जवाब लिखे, चित्र के आधार पर कहानी बनाई, अधूरी कहानी/ कविता को पूरा किया और अपनी कल्पना से कविताएँ लिखीं। पढ़ने-लिखने से जुड़ी ये सभी गतिविधियाँ सभी बच्चों द्वारा एक साथ की गईं। सभी बच्चों का एक ही कक्षा से होना ज़रूरी नहीं था। चूँकि शिक्षक एक दिन पहले वर्कशीट के प्रयोग की योजना बनाते हैं, उनके लिए बहु-कक्षा, बहु-स्तरीय (एमजीएमएल) समूह के साथ काम करना और उनका सीखना सुनिश्चित करना आसान और उपयोगी हो जाता है।

अनुभवों से जुड़कर सीखना

सीखना सम्भव हो इसके लिए, विषयवस्तु बच्चों के परिवेश से सम्बन्धित अनुभवों से जुड़ी होनी चाहिए और बातचीत ऐसे सन्दर्भ में होनी चाहिए जिनसे वे परिचित हों। इसलिए, प्राथमिक कक्षाओं के लिए तैयार की गईं वर्कशीटों की विषयवस्तु उच्च प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के साथ मिलकर सार्थक काम करने में भी मददगार होती है। हमने सभी कक्षाओं के बच्चों को अपने दोस्तों के साथ बातचीत करने, संवादों को लिखने, ख़ुद के अनुभव के आधार पर पाठ की सामग्री को समझने और इन वर्कशीटों के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करने को कहा है। यह उनके लिए काफ़ी फ़ायदेमन्द साबित हो रहा है। उदाहरण के लिए, एक वर्कशीट में अकाल का वर्णन था। जब हमने बच्चों से अकाल के बारे में उनके परिवेश से जुड़ा सवाल पूछा तो उन्होंने लिखा कि उनके क्षेत्र में अकाल नहीं है! फिर, हमें उन्हें अकाल की अवधारणा समझाने की ज़रूरत महसूस हुई। इसके परिणामस्वरूप अकाल और उसके प्रभाव पर एक चर्चा हुई और उसके बाद उन्हें एक वीडियो दिखाया गया।

बच्चों के लिए वर्कशीट एक ऐसा प्रभावशाली तरीक़ा है जिनके माध्यम से वे किसी स्थिति के बारे में चर्चा कर सकते हैं, उसे अभिव्यक्त कर सकते हैं और उसका विश्लेषण कर सकते हैं। साथ ही अपने अनुभवों का उपयोग करके ख़ुद को खुलकर अभिव्यक्त कर सकते हैं। जल्दी ही जो बच्चे केवल शब्दों को पहचान सकते थे वे चित्रों की सहायता से नाम लिखने का प्रयास करने लगे थे; जो लोग सरल वाक्यों और कहानियों को पढ़ सकते थे, वे अब उन्हें समझ सकते थे और प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे। कुछ बच्चों ने एक पैसेज/ कहानी पढ़कर ख़ुद के प्रश्न बनाए। इस प्रकार, समूह के प्रत्येक बच्चे ने अपनी समझ के अनुसार वर्कशीट का उपयोग किया और इससे शिक्षकों को एमजीएमएल समूहों में सीखने का माहौल बनाने में मदद मिली।

16. नीचे लिखी कविता की पंक्तियों को आगे बढ़ाते हुए खाली जगह में मन से सोचकर लिखो।

पूर्णिमा 4

बरसते हुए बादल ऐसे लगते हैं

जैसे अमृत बरस रहा हो

चाँदनी ऐसे लगती है

जैसे दूध बरस रहा हो

छाया ऐसे लगती है

जैसे शाम है

हरी दूब ऐसे लगती है

जैसे हरा कपड़ा बिछा है।

तालाब ऐसा लगता है

जैसे पानी की चादर बिछा हो।

17. दिए गए शब्दों में " - " चिह्न के स्थान पर 'और' लगाकर दोबारा लिखो।

माता - पिता =	माता और पिता
सुबह - शाम =	सुबह और शाम
अन्दर - बाहर =	अन्दर और बाहर
आगे - पीछे =	आगे और पीछे
रात - दिन =	रात और दिन
दाल - बाटी =	दाल और बाटी
झूठ - सच =	झूठ और सच

14. यह चित्र देखो, यहाँ मछली, कछुआ और साँप एक दूसरे से कुछ बात कर रहे हैं। ये आपस में क्या बात कर रहे होंगे अनुमान लगाओ और लिखो?

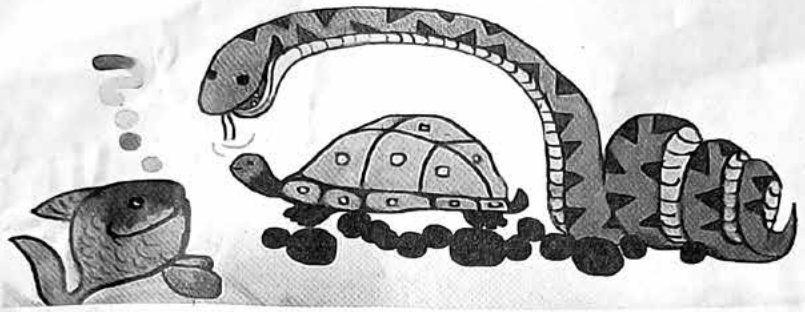

मछली = तुम दोनों कैसे हो?

कछुआ = मैं अच्छा हूँ।

साँप = मैं भी अच्छा हूँ।

मछली = साँप! तुम अपनी केंचुली कैसे उतारते हो

साँप = बहुत दर्द होता है।

कछुआ = मैं भी बहुत धीरे-धीरे चलता हूँ।

मछली = मैं भी पानी में जीवित रहती हूँ

कछुआ = मैं तो पानी में भी और जमीन पर भी चलता हूँ। उभयचर कहलाता हूँ।

साँप मैं भी उभयचर हूँ। मछली मैं जलचर हूँ।

भाषा सीखने में वर्कशीट का अर्थपूर्ण प्रयोग

वर्कशीटों को प्राथमिक कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों के पाठों के साथ-साथ ग़ैर-पाठ्यपुस्तक सामग्रियों के आधार पर डिज़ाइन किया गया है। कहानियों/ कविताओं को पढ़ने, नए शब्दों को समझने और वाक्यों में उनका प्रयोग करने से जुड़ी गतिविधियाँ बच्चों के लिए बहुत फ़ायदेमन्द रही हैं। उन्हें किसी पात्र के स्थान पर स्वयं को रखकर या उस पात्र की जगह किसी अन्य पात्र को रखकर सोचने और फिर उसी कहानी/ कविता को दोबारा लिखने के मौक़े दिए जाते हैं।

ये गतिविधियाँ बच्चों को उनके लेखन में रचनात्मक ढंग से भाषा का उपयोग करने में मदद करती हैं। वे समूह में एक-दूसरे का लिखा पढ़ते हैं जिससे उन्हें उनके साथियों से सीखने का मौक़ा मिलता है।

बच्चों के सीखने के स्तरों का आकलन करने के बाद उनके एक बड़े समूह को छोटे समूहों में विभाजित किया गया। उनकी सीखने की ज़रूरतों के अनुरूप गतिविधियाँ बनाई गईं और वर्कशीट व्यक्तिगत कार्य, उपसमूह के कार्य और मूल्यांकन के लिए तैयार और इस्तेमाल की गईं। ये वर्कशीट कक्षा-1 से 8 तक के बच्चों के साथ काम करने में मददगार होती हैं।

नियमित कक्षाओं में बहुआयामी प्रयोजन

बच्चे अब व्यवस्थित स्कूली शिक्षा प्रणाली से जुड़ गए हैं और हमारी टीम कक्षाओं में वर्कशीटों के बहुआयामी प्रयोजन में सफल रही है। हम यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि वे वर्कशीट, जो प्राथमिक कक्षाओं के लिए बनाई गई हैं, न केवल उन बच्चों की सीखने में मदद करती हैं, बल्कि जो बच्चे सीखने की उपलब्धि के संकेतकों पर अपनी कक्षा के स्तर से एक या दो कक्षाएँ पीछे हैं, उनकी भी मदद करती हैं? हमने इसके लिए, उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों के साथ जिस प्रकार की वर्कशीट का प्रयोग किया है उसमें शामिल हैं : समझ-बूझ के साथ पढ़ना और अपने विचारों को लिखना; एक कहानी या कविता पढ़ना और अपने अनुभवों के साथ उसकी समझ को जोड़ना; पैसेज पढ़ना और प्रश्नों के उत्तर देना तथा व्याकरण की अवधारणाओं को दोहराना; तस्वीर के आधार पर रचनात्मक लेखन करना; प्रश्नों को पढ़ने के बाद सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थितियों का विश्लेषण करना और अपने विचारों को लिखना इत्यादि। प्रत्येक कक्षा में बच्चों के सीखने के स्तरों के आधार पर तीन समूह बनाए जाते हैं। इन समूहों में बच्चों को वर्कशीटों का उपयोग करते हुए साथ में सीखने और कार्य करने में बहुत मदद मिलती है।

वर्कशीटों की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता और गतिविधियों पर आधारित उनका स्वरूप, बच्चों के साथ-साथ उन शिक्षकों के लिए भी फ़ायदेमन्द साबित हुआ है जो बच्चों की सीखने की ज़रूरतों को समझने और तदनुसार योजना बनाने में सक्षम होते हैं। शिक्षकों द्वारा तैयार की गई एक त्रि-स्तरीय योजना के माध्यम से सीखने के विभिन्न स्तरों वाले बच्चों के साथ किए जाने वाले उनके प्रयासों में ये वर्कशीट एक महत्त्वपूर्ण खोज़ सिद्ध हुई हैं।

हिस्सा लेना और सीखना

समूहों में वर्कशीटों के साथ काम करते हुए, हमने ऐसे कई पहलुओं को जाना जो बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब सभी बच्चे एक ही वर्कशीट हल करते हैं, तो वे कहानी या कविता को साथ पढ़ते और समझते हैं। कुछ बच्चे उन बच्चों की मदद करते हैं जिन्हें पढ़ने में कठिनाई होती है और वे उनके साथ जानी-पहचानी परिस्थितियों से जोड़कर नए शब्दों के अर्थों पर बातचीत करते हैं। वे अपने समूहों में वर्कशीट में दिए गए चित्रों पर भी चर्चा करते हैं और उन चित्रों से जुड़े अपने अनुभवों को लिखते हैं।

संक्षेप में कहा जाए तो फ़ाउण्डेशन द्वारा तैयार इन वर्कशीटों ने बच्चों को सीखने में मदद की है और उनके भाषा कौशल का विकास किया है और उन्हें बहु-कक्षा, बहु-स्तरीय (एमजीएमएल) समूहों में साथ मिलकर काम करने के अवसर दिए हैं। वर्कशीट शिक्षकों को एमजीएमएल समूहों में व्यवस्थित ढंग से काम करने के लिए कार्यनीतियाँ भी प्रदान करती हैं। जहाँ तक बच्चों के सीखने का सवाल है, ये वर्कशीट न केवल महामारी के दौरान मोहल्ला शिक्षण में उपयोगी रही थीं, बल्कि स्कूल की नियमित पढ़ाई में भी इनकी बड़ी भूमिका है।

ममता शर्मा अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मण्डवा,सिरोही, राजस्थान में प्रिंसिपल हैं। इससे पहले, वे कूकस, जयपुर में बोध शिक्षा समिति के मानसगंगा हायर सेकेंडरी स्कूल में प्रिंसिपल और हिन्दी रिसोर्स फ़ेलो रही हैं। उन्होंने बीएड के अलावा हिन्दी साहित्य और राजनीति विज्ञान में एमए किया है। उन्हें कक्षा-1 से 12 को हिन्दी पढ़ाने का 16 सालों से अधिक का अनुभव है। उनसे mamta.sharma@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : प्रज्ञा चौधरी **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय